International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-11-2022, Accepted: 15-12-2022, Published: 31-12-2022
Volume 8, Issue 6, 2022, Page No. 32-34

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक दुविधा का एक अध्ययन

दीपक कुमार
शिक्षाशास्त्र (नेट), एम ए, डॉ राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
आज के समय में सबसे आगे चल रहा है तो वो है– राजनीति। चाहे वह परिवार हो, समाज हो, विद्यालय हो, महाविद्यालय हो या विश्वविद्यालय। राजनीति के चलते आज विद्यार्थियों को उनके मिलने वाली सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। विद्यार्थियों को विद्यालय में मिलने वाले छात्रवृत्ति से लेकर विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा एवं विदेशी जाकर शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रवृत्ति ही हो, आज राजनीति के चलते गरीब एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति से कमजोर विद्यार्थी इसका फायदा नहीं उठा पाते हैं चाहे वह कितनी भी शैक्षिक योग्यता रखते हो। ऐसी अवस्था में गरीब एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के उच्च शैक्षिक योग्यता रखने वाले विद्यार्थी को उसका लक्ष्य न प्राप्त होना उसमें संघर्ष का उत्पन्न होना उसके सामाजिक दुविधा को बढ़ा देता है और वह जीवन में लक्ष्यों को न प्राप्त करने के कारण वह किसी न किसी रूप में दूसरों को नुकसान पहुँचा सकता है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आज की शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक दुविधा बहुत उँचे स्तर पर देखा जा सकता है जिसमें भाई, भतीजावाद के साथ–साथ जातिवाद, क्षेत्रवाद एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के साथ–साथ चाटुकारिता भी घुस चुकी है जिससे विद्यार्थियों को मिलने वाली सुविधाएँ सभी को नही मिल पा रही है और वही कुछ विद्यार्थी अपने को सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं तथा कुछ इसके विपरीत विचारों को मन में रख लेते हैं जिससे उनमें विद्यालय के प्रति उनके द्वन्द्व बढ़ने लगते हैं।

मूल शब्दः स्नातक, विद्यार्थी, सामाजिक दुविधा, अध्ययन

प्रस्तावना
विकास के आधुनिक युग में राष्ट्र की बौद्धिक सम्पदा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। निःसन्देह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की व्यवस्थित एवं प्रभावी विधा है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सहायक होती है। वह व्यक्ति जो शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से दृढ़ होते हैं, दूसरों के बातों एवं भावनाओं को अच्छी तरह से समझ सकते हैं। वही व्यक्ति वातावरण के साथ सही ढंग से समायोजन कर पाते है। एक सुसंतुलित व्यक्ति का व्यवहार केवल उसकी तार्किक योग्यता को ही नहीं बल्कि उसकी सामाजिक क्षमता को भी प्रदर्शित करता है। दूसरें शब्दों में यह कहा जा सकता है कि बुद्धिमान होने के लिए सामान्य बुद्धि लब्धि के साथ ही सामाजिक बुद्धि का अधिक होना अति आवश्यक है एवं अपनी बातों को व्यक्त करने में कितने सक्षम है इस बात का भी छात्र–छात्राओं पर प्रभाव देखा जाता है।

मानव विकास की कड़ी में किशोरावस्था का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इस उम्र में किशोर एवं किशोरी को अपने शरीर में एक नई स्फूर्ति एवं ऊर्जा का अनुभव होता है। किशोर एवं किशोरी अपने को प्रौढ़ समझने लगते है, उनकी कल्पनायें आसमानों को छूने लगती है, वे अपने भविष्य के प्रति सचेत रहकर एक सफल व्यक्ति अच्छे नागरिक बनने का मार्ग प्रशस्त करते है। किन्तु यह सब तभी सम्भव है जब वे सामाजिक व मानसिक रूप से स्थिर रहे। अतः छात्र एवं छात्रायें यदि समाज से इस अवस्था में समायोजित रहते है तभी उनके प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा अन्यथा वे पथभ्रमित हो सकते है। व्यक्ति के शैक्षिक जीवन में उच्च माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा का बड़ा महत्व होता है। इसी समय से व्यक्ति को भविष्य में किस क्षेत्र में कार्य करना है उसकी नींव पड़ती है। छात्र एवं छात्रा को वातावरण से समायोजन करने में सामाजिक बुद्धि का प्रभाव पड़ता है या नहीं। यह जानना आवश्यक है क्योंकि सामाजिक बुद्धि का इस अवस्था में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

आज भारतीय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में प्रायः शिक्षण सामग्री तथा सूचनाओं की कमी होने के कारण विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करना अपना कर्तव्य समझता है और उसका एक ही लक्ष्य रह गया है कि जीविकोपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त करें। इसी कारण आज का युवा अधूरी शिक्षा को लेकर रोजगार के लिए इधर–उधर भटक रहा है। साथ ही उसकी आवश्यकता की पूर्ति न होने के कारण विद्यार्थी पथभ्रमित होकर अवांछनीय कार्यों की ओर प्रेरित होता है यह बात कभी भी नजर अंदाज नहीं की जा सकती है। जिसका जीता–जागता उदाहरण इसी साल दिल्ली में होने वाले दंगों से देखा जाता है जिसमें कितने मासूमों की जान गयी वहीं आज के समय में भाई–भाई की हत्या, आये दिन समाचार में देखने को मिलते हैं कि एक नाबालिक की बलात्कार कर हत्या कर दी गयी वहीं अपनी इच्छाओं की पूर्ति हेतु दूसरों को धोखा देना आदि। जिसके कारण समाज में लोगों का लोगों से विश्वास उठता जा रहा है वहीं मानवीय मूल्यों की कमी होती जा रही है। इसी कारण आज का युवा अधूरी शिक्षा को लेकर रोजगार के लिए इधर–उधर भटक रहा है। साथ ही उसकी आवश्यकता की पूर्ति न होने के कारण विद्यार्थी पथभ्रमित होकर अवांछनीय कार्यों की ओर प्रेरित होता है जिसको हम सामाजिक दुविधा का नाम दे सकते हैं।

दुविधा शब्द संघर्ष का पर्यायवाची शब्द है जिसमें टकराव, स्पर्द्धा, होड़, चेष्टा, रगड़, द्वेष आदि का संग्रह होता है। दुविधा का मनोविज्ञान की भाषा में द्वन्द्व भी कहा जा सकता है। जब किसी व्यक्ति विशेष में किसी वस्तु, व्यक्ति तथा पारिवारिक एवं सामाजिक ताना–बाना से सामंजस्य नहीं बैठता है और उससे सन्तुष्टि नहीं होती है तो उसमें द्वन्द्व की स्थिति बन जाती है और इस स्थिति में व्यक्ति के अन्दर कुंठा, निराशा, पीड़ा आदि उत्पन्न हो जाती है और इस आधार पर वह दुविधा की स्थिति में रहता है।

सामाजिक दुविधा की परिभाषा

जब व्यक्ति द्वारा समाज में विचारों के प्रति विरोधात्मक प्रकृति सम्बन्धी विचार उत्पन्न होता है उसमें दो भावनाओं एवं विचारों का टकराहट होती है की इसे करे या न करें और उसके मन में अन्तर्द्वन्द चलता रहता है, इसी को सामाजिक दुविधा कहते हैं।

सामाजिक दुविधा सामंजस्य न बैठने की स्थिति में उत्पन्न होता है और व्यक्ति के अन्दर किसी व्यक्ति विशेष या विचारों तथा सामाजिक प्रक्रियाओं के प्रति उसके अपने विचार का मेल न खाना भी हो सकता है।

मनुष्य के अन्दर सामाजिक दुविधा उत्पन्न होने के अनेकानेक आधार है जो निम्नांकित है–

- परस्पर–विरोधी भाव–प्रवणता
- आत्मपीड़न की प्रवृत्ति
- विफलता
- अतृप्त काम–भावना
- भ्रम के कारण संघर्ष
- हीन–भावना
- संघर्ष के भेद
- आन्तरिक संघर्ष

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक दुविधा

स्नातक स्तर के विद्यार्थी पूर्णरूप से सामाजिक सम्बन्धों से जुड़े होते हैं और समाज में अपना योगदान भी देना शुरू कर देते हैं। समाज में होने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, क्षेत्रीय कार्यक्रम में बढ़–चढ़ हिस्सा लेते हैं एवं अपनी भावनाओं के आधार पर उसमें परिवर्तन की इच्छा जाहिर करते हैं। हमारे देश के लोग अधिकतर सामाजिक रूप से जुड़े हुए वातावरण में रहते हैं और उसमें विभिन्न जाति, क्षेत्र एवं अन्य भाषाओं के लोग एक साथ रहते हैं वहीं हमारे देश में शैक्षिक कार्यों के बनाये गये विद्यालय में भी विभिन्न जाति, धर्म एवं अन्य भाषाओं के बच्चों को एक साथ शिक्षा प्रदान की जाती है और विद्यार्थियों के एक–दूसरे के साथ सामंजस्य न बैठने पर या उनके विचारों में तालमेल न होने पर उनमें द्वन्द्व उत्पन्न होता है वहीं शिक्षकों द्वारा किसी विद्यार्थी के पीछे पड़ जाने एवं उसे बार–बार रोक–टोक एवं प्रताड़ित करते रहने पर उस विद्यार्थी में द्वन्द्व उत्पन्न हो जाता है और वह विद्यालय तथा शिक्षक को नुकसान पहुँचाने न पहुँचाने जैसे विचारों में खोये रहता है जिससे उसमें सामाजिक दुविधा उत्पन्न हो जाती है। आज शिक्षा व्यवस्था बदलने के कारण विद्यार्थियों में भी आपसी द्वन्द्व बढ़ गया है। विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ सी मची है जिसमें फैशन वाले कपड़े पहनना, अच्छा खाना, अच्छा पहनना, अपनी बातों को आगे रखना, समूहों में नेता बनना आदि विचारों के साथ वह हमेशा उधेड़–बुन की स्थिति में रहता है। वहीं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले विद्यार्थी अपने पैसों के बल पर अन्य बच्चों को दबाये जाने एवं उन्हें अपने पीछे–पीछे घुमाते रहते हैं वहीं मौके मिलने पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति से कमजोर व्यक्ति की बेइज्जती करना, उसे मारना पीटना तथा सबके सामने हमेशा छोटा बताते रहते हैं जिससे ऐसे विद्यार्थियों में द्वन्द्व की भावना उत्पन्न होती है और वे अपने स्वयं की स्थिति एवं अपने परिवार के वातावरण से बाहर निकलकर अपने पैसा कमाने के विचारों से पढ़ाई की तरफ से मन हटने लगता है और द्वन्द्व की स्थिति में आने पर दूसरों को नुकसान पहुँचाकर भी अपना फायदा देखने लगता है।

वहीं आज पश्चिमी सभ्यता हमारे समाज में एक ऐसी छाप छोड़ रही है जिसका शिकार सबसे अधिक विद्यार्थी हो रहे हैं क्योंकि स्नातक स्तर पर पढ़ने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं और किशोरों का मन हमेशा चंचल होता है और चमक–धमक देखकर उसे पाने की लालसा तथा किशोरों के संवेगों में बहुत से परिवर्तन भी होता है। पश्चिमी कपड़े पहनना, पश्चिमी सभ्यता अपनाना एवं अंग्रेजी में बात करना विद्यार्थियों को अच्छा लगता है वहीं अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को कहते हैं कि हम रूढ़िवादी समाज में रह रहे हैं और अपने सामाजिक विचारों एवं संस्कृति को बदलने के विचार भी रखते हैं जिससे समाज के बड़े–बूढ़े इनकी बातों को स्वीकृति प्रदान नहीं करते हैं और ऐसी अवस्था में सामाजिक दुविधा उत्पन्न हो जाती है।

आज के समय में सबसे आगे चल रहा है तो वो है– राजनीति। चाहे वह परिवार हो, समाज हो, विद्यालय हो, महाविद्यालय हो या विश्वविद्यालय। राजनीति के चलते आज विद्यार्थियों को उनके मिलने वाली सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। विद्यार्थियों को विद्यालय में मिलने वाले छात्रवृत्ति से लेकर विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा एवं विदेश जाकर शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रवृत्ति के कारण ही, आज राजनीति के चलते गरीब एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति से कमजोर विद्यार्थी इसका फायदा नहीं उठा पाते हैं चाहे वह कितनी भी शैक्षिक योग्यता रखते हो। ऐसी अवस्था में गरीब एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति के उच्च शैक्षिक योग्यता रखने वाले विद्यार्थी को उसका लक्ष्य न प्राप्त होना उसमें संघर्ष का उत्पन्न होना उसके सामाजिक दुविधा को बढ़ा देता है और वह जीवन में लक्ष्यों को न प्राप्त करने के कारण वह किसी न किसी रूप में दूसरों को नुकसान पहुँचा सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आज की शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक दुविधा बहुत उँचे स्तर पर देखा जा सकता है जिसमें भाई, भतीजावाद के साथ–साथ जातिवाद, क्षेत्रवाद एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के साथ–साथ चाटुकारिता भी घुस चुकी है जिससे विद्यार्थियों को मिलने वाली सुविधाएँ सभी को नही मिल पा रही है और वही कुछ विद्यार्थी अपने को सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं तथा कुछ इसके विपरीत विचारों को मन में रख लेते हैं जिससे उनमें विद्यालय के प्रति उनके द्वन्द्व बढ़ने लगते हैं।

सुझाव

शिक्षाशास्त्रियों, समाज सुधारकों, शिक्षाविदों, परामर्शदाताओं, मनोवैज्ञानिक, चिकित्सकों, एवं शिक्षा निदेशकों का मार्ग दर्शन करते है जो छात्र एवं छात्राओं की समस्याओं को अनदेखा करते है एवं उच्च शिक्षा के लिए नियम एवं पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं तथा छात्रों के निर्देशन एवं परामर्श में रुचि रखते हैं किसी भी देश में माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यदि माध्यमिक शिक्षा पाकर व्यक्ति इधर–उधर भटकता एवं तनाव से ग्रसित होकर मानसिक रोगों से पीड़ित हो जाये तो देश के विकास की स्थिति क्या होगी? प्रस्तुत अध्ययन में इसी समस्या के तरफ लोगों का ध्यान आकार्षित करने का प्रयास किया गया है। जिससे भावी स्नातक स्तर के विद्यार्थी तथा देश का उत्तम एवं जागरुक नागरिक अपनी भूमिकाओं को बेहतर तरीके से अदा करके देश एवं स्वयं के विकास में योगदान दे सकता है।

आज का विद्यार्थी कल का निर्माता है। वर्तमान में जैसा देखने में आ रहा है कि सरकार द्वारा उच्च शिक्षा को रोजगार परक बनाने की पूरी कोशिश की जा रही है। लेकिन भू–मण्डलीयकरण के इस दौर में जब तक गुणवत्तायुक्त शिक्षा नहीं दी जायेगी तब तक छात्र एवं छात्राओं के भविष्य को सुदृढ़ नहीं किया जा सकता है। यद्यपि सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयासों के द्वारा लोगों को शिक्षा तो दी जा रही है, परन्तु शिक्षा अब व्यवसाय का रूप लेकर अपनी गुणवत्ता को खो चुकी है। अतः सरकार को उपाधि शिक्षा प्रसार के स्थान पर गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने के लिए प्रशासनिक स्तर पर प्रयास करने होगें जिससे उच्च शिक्षा प्राप्त

करने के बाद व्यक्ति एक सुरक्षित भविष्य पा सके तथा तनाव मुक्त एवं मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहकर देश तथा स्वयं का विकास कर सके।

स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के लिए मुक्त शिक्षा की व्यवस्था कर एवं उनके मनोसामाजिक से सम्बन्धित बातों को ध्यान में रखना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के सामाजिक दुविधा पर प्रभाव न पड़ें तथा शिक्षकों को भी विद्यार्थियों के सामाजिक दुविधा का ध्यान देना चाहिए जिससे विद्यार्थी जीवन में संवेग उच्च न होने पाये एवं घर में भी माता–पिता अपने बच्चों के बातों का ध्यान रखना चाहिए तथा उनकी माँगों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। जो चीजें माता–पिता के बस में है उन्हें उनको पूरा करना चाहिए एवं विद्यार्थियों की माँग उच्च है तो उन्हें समझाना चाहिए तथा अपने सामाजिक–आर्थिक स्तर का ज्ञान कराना चाहिए जिससे विद्यार्थी दुबारा इस प्रकार की सोच न रखें एवं मनोसामाजिक न होने पाये।

अनुसंधानों का अन्तिम लक्ष्य उत्कृष्टतम की प्राप्ति में सहयोग देना होता है। अध्ययन के निष्कर्षों के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हैं–

- विद्यालयी पाठ्यक्रम इस प्रकार का होना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धि का विकास हो सके।
- कुछ वर्षों से विद्यार्थियों में तनाव बढ़ता जा रहा है विशेषकर परीक्षा के समय में। अतः शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के विकास में सहायता करनी चाहिए जिससे उनका तनाव कम हो सके तथा वे परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन कर सके।
- अच्छी तरह से क्रियान्वित किए गए सामाजिक और भावनात्मक जानकारी के विद्यालयी कार्यक्रम विद्यार्थियों को सामाजिक तथा संवेगात्मक सन्तुलन स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं।
- विद्यालय में विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के विकास में सहायता के लिए निर्देशन व परामर्श सेवाएँ होनी चाहिए।
- विद्यालयी शिक्षा द्वारा विद्यार्थी की आत्म–भिज्ञता, आत्म–प्रबन्धन, आत्म– अभिप्रेरणा, तदनुभूति व सामाजिक दक्षताओं का सम्बर्द्धन किया जाना चाहिए।
- भाषा, चिन्तन के माध्यम और अभिव्यक्ति की आधारशिला है। अतः शिक्षक को बालकों के भाषा–ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिए।
- ज्ञान, चिन्तन का मुख्य स्तम्भ है। अतः शिक्षक को बालकों के ज्ञान का विस्तार करना चाहिए।
- तर्क, वाद–विवाद और समस्या–समाधान, चिन्तन शक्ति को प्रयोग करने का अवसर देते हैं। अतः शिक्षक द्वारा बालकों को इन बातो के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए।
- उत्तरदायित्व अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है। अतः शिक्षक को बालकों को उत्तरदायित्व के कार्य सौंपने चाहिए।
- रूचि और जिज्ञासा का अभिव्यक्ति में महत्वपूर्ण स्थान है। अतः शिक्षक को बालकों की इन प्रवृत्तियों को जागृत रखना चाहिए।
- प्रयोग, अनुभव और निरीक्षण, अभिव्यक्ति को शक्तिशाली बनाते हैं। अतः शिक्षक को बालकों के लिए इनसे सम्बन्धित वस्तुएँ जुटानी चाहिए।
- शिक्षक को बालकों को विचार करने और अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- शिक्षक को प्रश्न–पत्र में ऐसे प्रश्न देने चाहिए, जिनके उत्तर बालक भली– भाँति विचार करने के बाद ही दे सकें।

संदर्भ सूची

1. कुन्दू, मौमिता एवं अन्य (2015). एडजेस्टमेन्ट ऑफ अण्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर सोशल इंटेलीजेन्स, अमेरिकन जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, वाल्यूम–3, नं0 11, पृ0 1398–1401
2. गनेई, एम.वाई. एवं मुदशिर, हाफिज (2015). ए स्टडी ऑफ सोशल इंटेलीजेन्स एण्ड ऐकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ कॉलेज स्टूडेन्ट्स ऑफ डिस्ट्रिक श्रीनगर, जम्मू एण्ड कश्मीर, इण्डिया, जर्नल ऑफ अमेरिकन साइंस, 11(3), पृ0 23–27, www.jofamericanscience.org
3. सिंह, सविता एवं सिंह बीना (2016). महाविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, *युगांतर : अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका*, वर्ष–7, अंक–29, पृ0 6–9
4. गुप्ता, प्राची (2018). अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शिक्षा में सामाजिक बाधाओं का तुलनात्मक अध्ययन, *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसड एजुकेशनल रिसर्च*, वॉल्यूम–3, इश्शू–2, पृ0 367–368
5. फ्रैंकी, दीपा एवं चामुण्डेश्वरी, एस. (2014). साइको–सोशल कोरिलेट्स ऑफ ऐकेडमिक एचिवमेन्ट ऑफ स्टूडेन्ट्स, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ कैरेन्ट रिसर्च एण्ड ऐकेडमिक रिव्यू, वाल्यूम–2, नं0 2, पृ0 148–158
6. मुगुरू, कमऊ ग्रेस (2014). इन्फुएन्स ऑफ सोशल स्ट्रटिफिकेशन ऑफ ऐकेडमिक परफार्मेन्स ऑफ पब्लिक एण्ड प्राइवेट सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन नरोबी कन्ट्री, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन एजुकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ नरोबी।
7. यादव, संजय (2013). उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
8. सिंह, सविता एवं सिंह बीना (2016). महाविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन, *युगांतर : अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका*, वर्ष–7, अंक–29, पृ0 6–9